आर. एन. आई. नं. : RAJHIN/2013/59711

पोस्टल रजि. नं. : बीकानेर/146/2015-17

पशु पालन नए आयाम

परिकल्पना एवं निर्देशन - प्रो. (डॉ.) कर्नल ए. के. गहलोत

वर्ष : 3 | अंक : 12 | बीकानेर, अगस्त, 2016 | मूल्य : ₹ 2.00

प्रो. (डॉ.) कर्नल ए. के. गहलोत

कुलपति की कलम से.....

स्वस्थ पर्यावरण की खातिर वृक्षारोपण करें

वनों के लगातार दोहन, शहरीकरण, औद्योगिकरण और भौतिक संसाधनों की खातिर वन संपदा के नुकसान के कारण प्राकृतिक संतुलन बुरी तरह प्रभावित हो रहा है। वायु, जल और मिट्टी के प्रदूषण से समस्त जीव–जगत के अस्तित्व पर सवालिया निशान खड़ा हो गया है। विश्व की जनसंख्या में तेजी से बढ़ोतरी हो रही है, इसके विपरीत पशु–पक्षियों और वन्य प्राणियों और समुद्री जीव–जंतुओं की संख्या कम हो रही है। विश्व की बड़ी आबादी, पशु–पक्षियों और प्राणियों के खान–पान और स्वस्थ जीवन जीने के लिए भी मुश्किलों का सामना करना पड़ सकता है। प्रकृति और पृथ्वी की रक्षा करने के लिए पर्यावरण को बेहतर बनाए रखना हमारे लिए बेहद जरूरी है। हमें अपने स्तर पर ही चंहु ओर एक सुरक्षित और स्वच्छ पर्यावरण के लिए पहल करनी होगी। मानसून की बरसात के साथ ही खेत–खलिहानों, गोचर और ओरण में सघन वृक्षारोपण कार्य करके अपना योगदान दे सकते हैं। प्राचीन काल से चले आ रहे गोचर, ओरण और गांवों के चारागाह हमारे पशु–पक्षियों और वन्य प्राणियों के पोषण और जीवन का आधार रहे हैं। इनकी सार–संभाल, पल्लवित और सुरक्षित करने का यही उपयुक्त समय है। इस दिशा में राजस्थान पशुचिकित्सा और पशु विज्ञान विश्वविद्यालय ने एक नई सोच के साथ कुछ कदम उठाए हैं। देश की करीब छः करोड ग्रामीण आबादी की आजीविका में डेयरी उद्योग एक प्रमुख आधार है। वैज्ञानिकों के अनुसार जलवायु परिवर्तन के कारण आने वाले वर्षों में दूध के उत्पादन में कमी आएगी। देशी गाय इस समस्या का हल हो सकती है। तापमान बढ़ने से दूध के उत्पादन और प्रजनन क्षमता में गिरावट से सबसे ज्यादा गायों की विदेशी और संकर नस्लें प्रभावित होगी। भैंसों पर भी इसका असर पड़ेगा। ग्लोबल वार्मिंग से देशी नस्लें सबसे कम प्रभावित होंगी क्योंकि इनमें तापमान के प्रति अधिक अनुकूलन की क्षमता होती है। वेटरनरी विश्वविद्यालय के वैज्ञानिक राज्य में पाई जाने वाली छः देशी गौ नस्लों के संवर्द्धन और विकास, प्रजनन में सुधार तथा हैरिटेज जीन बैंक के माध्यम से इनके प्रसार के लिए प्रयत्नशील हैं। इसके अलावा वेटरनरी विश्वविद्यालय के बीकानेर स्थित मुख्य परिसर के 6300 वर्ग मीटर क्षेत्रफल में वर्षा जल संग्रहण तंत्र कायम किया गया है। इस परिसर में सघन वनस्पति और वृक्षारोपण अभियान चलाकर एक उपवन के रूप में विकसित किया गया है, जहां सैंकडों पक्षियों को पनाह मिली है। राज्य के 17 जिलों में स्थित विश्वविद्यालय के तमाम संस्थानों, संस्थाओं, महाविद्यालयों को भी सघन वृक्षारोपण अभियानों से हरे–भरे परिसरों में विकसित किया जा रहा है। आप भी अपने गांव, गोचर– ओरण, खेत–खलिहानों में वृक्षारोपण कर इन्हें हरा–भरा बनाने के कार्य में जुटकर पर्यावरण को सुरक्षित और संवर्द्धित कर सकते हैं।

(प्रो. ए. के. गहलोत)

खनिज, वन एवं पर्यावरण राज्य मंत्री द्वारा विश्वविद्यालय परिसर में वृक्षारोपण

मुख्य समाचार

वन राज्य मंत्री श्री राजकुमार रिणवां द्वारा वेटरनरी विश्वविद्यालय में वृक्षारोपण

खनिज, वन एवं पर्यावरण राज्यमंत्री श्री राजकुमार रिणवां ने कहा है कि टीम–राजुवास की कड़ी मेहनत और कार्य के प्रति निष्ठा के कारण वेटरनरी विश्वविद्यालय ने उन्नति के नए आयाम स्थापित कर देश में गौरवपूर्ण स्थान बनाया है। वन राज्यमंत्री रिणवां 23 जुलाई, 2016 को

विश्वविद्यालय में फैकल्टी सदस्यों को सम्बोधित कर रहे थे। इससे पूर्व श्री रिणवां ने विश्वविद्यालय परिसर में तुलसी व पीपल का पौधा रोपित कर वृक्षारोपण अभियान की शुरूआत की। खनिज एवं वन राज्यमंत्री श्री रिणवां ने राज्य की मुख्यमंत्री श्रीमती वसुन्धरा राजे को बधाई दी कि कुलपति प्रो. गहलोत के नेतृत्व और कार्यों की बदौलत उनके कार्यकाल में अभिवृद्धि की है। इस अवसर पर वन राज्यमंत्री ने कहा कि राज्य का पशुधन महत्वपूर्ण है। देश के अन्य प्रांतों में किसानों की स्थिति की चर्चा करते हुए उन्होंने कहा कि राजस्थान का किसान व पशुपालक पशुधन के सहारे हर परिस्थिति में सक्षम और खुशहाल बना रहा है। उन्होंने राज्य में मूक प्राणियों के प्रति लोगों के रिश्तों और भावनात्मक लगाव और सेवा कार्य को भी अद्‌बुत बताया। वन राज्यमंत्री ने कहा कि मुख्यमंत्री के जल स्वावलम्बन अभियान से राज्य के गांवों और पर्यावरण की दशा में एक सुखद परिवर्तन आ रहा है। उन्होंने वेटरनरी विश्वविद्यालय द्वारा देशी गौवंश के विकास और संवर्द्धन उपायों की सराहना करते हुए कहा कि डेनमार्क और ब्राजील जैसे देशों में हमारी देशी गौवंश से अच्छा दुग्ध उत्पादन मिला है। अन्य राज्यों की तर्ज पर राज्य में भी गौ–अभयारण्य बनेगा। इससे पूर्व वेटरनरी विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. ए.के. गहलोत ने अपने स्वागत भाषण में राजुवास द्वारा किए गए नवाचारों और स्वदेशी गौवंश के संवर्द्धन और विकास कार्यों की जानकारी दी। उन्होंने बताया कि राज्य में विश्वविद्यालय द्वारा युवाओं को स्व–रोजगार के लिए कौशल विकास प्रशिक्षण के कार्यक्रम बहुत उपयोगी सिद्ध हो रहा है। पशुओं की लघु चिकित्सा सेवाओं के लिए प्रति वर्ष दो–तीन हजार युवाओं को स्व–रोजगार के अवसर उपलब्ध हो रहे हैं। कुलपति प्रो. गहलोत ने वन राज्य मंत्री को विश्वविद्यालय में स्थापित वर्षा जल संरक्षण मॉडल की जानकारी दी। समारोह में वेटरनरी कॉलेज के अधिष्ठाता प्रो. जी.एस. मनोहर, वित्त नियंत्रक अरविंद बिश्नोई सहित सभी डीन/ डॉयरेक्टर ने वन राज्य मंत्री का स्वागत किया। राज्य मंत्री ने इस अवसर पर पशुधन चारा संसाधन प्रबंधन एवं तकनीक केन्द्र द्वारा प्रकाशित पशु आहार एवं चारा बुलेटिन के ताजा अंक का विमोचन भी किया।

राजुवास द्वारा संभाग स्तरीय किसान मेला और 24x7 हैल्पलाइन शीघ्र

वेटरनरी विश्वविद्यालय द्वारा शीघ्र ही चौबीसों घंटे टोल फ्री हैल्पलाइन सेवा शुरू की जाएगी। इससे राज्य के सभी किसान, पशुपालक और विद्यार्थियों को विशेषज्ञ सेवाएं मुहैय्या करवाई जाएगी। विश्वविद्यालय द्वारा बीकानेर में संभागस्तरीय विशाल कृषक मेले का आयोजन भी किया जाना प्रस्तावित है। वेटरनरी विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. ए.के. गहलोत 28 जुलाई को पशुधन चारा संसाधन प्रबंधन एवं तकनीक केन्द्र और उपनिदेशक कृषि व पदेन परियोजना निदेशक आत्मा के संयुक्त तत्वावधान में आयोजित दो दिवसीय पशुपालक प्रशिक्षण शिविर के समापन समारोह को सम्बोधित कर रहे थे। उन्होंने कहा कि उन्नत कृषि और पशुपालन को शामिल रूप में अपनाए जाने का समय है। नई तकनीक का समावेश करके ही कृषि को फायदेमन्द बनाया जा सकता है। पारंपरिक पशुपालन में उन्नत पशुपोषण और चारे का खास महत्व है। खेत और खेती को समृद्ध बनाने के लिए विश्वविद्यालय में अनेकों नवाचार किए जा रहे हैं जिनका लाभ कृषक और पशुपालक समुदाय को मिलेगा। इस अवसर पर संयुक्त निदेशक आनंद स्वरूप छींपा एवं उपनिदेशक कृषि और परियोजना निदेशक आत्मा बी.आर. कड़वा ने भी सम्बोधित किया। प्रशिक्षण समन्वयक और प्रसार शिक्षा निदेशक प्रो. आर.के. धूड़िया ने बताया कि वेटरनरी विश्वविद्यालय द्वारा आत्मा परियोजना के तहत कोलायत तहसील के 30 पशुपालक–कृषकों को लाभान्वित किया गया है। प्रशिक्षण में कृषकों की प्रश्नोत्तरी में प्रथम आए देबूराम, द्वितीय ओमप्रकाश और तृतीय रहे राजेश कुमार को पुरस्कार देकर सम्मानित किया गया।

डाइयां गांव में राजुवास द्वारा सूचना केन्द्र की स्थापना होगी

माननीय राज्यपाल द्वारा वेटरनरी विश्वविद्यालय को गोद दिए डाइयां के लिए गठित "स्मार्ट विलेज" समन्वय समिति की पहली बैठक 12 जुलाई को वेटरनरी विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. ए.के. गहलोत की अध्यक्षता में आयोजित की गई। बैठक में जिला स्तरीय अधिकारियों सहित बिजली, जलदाय, सार्वजनिक निर्माण विभाग के अभियंताओं ने भाग लिया। बैठक में विभिन्न विभागों के अधिकारियों के साथ स्मार्ट विलेज के लिए प्रस्तुत कार्य योजना के प्रस्ताव पर विचार–विमर्श किया गया। कुलपति प्रो. गहलोत ने कहा कि विश्वविद्यालय डाइयां में शीघ्र ही एक सूचना केन्द्र स्थापित कर कम्प्यूटर सेवाएं सुलभ करवाएगा। इससे ग्रामीण और युवाओं को राज्य सरकार की सभी कल्याणकारी और ग्रामीणों की लाभकारी योजनाओं की जानकारी मुहैय्या करवाई जाएगी। डाइयां के सर्वे के दौरान गांव में एक पुराना तालाब मिला है। इसकी आगोर चिन्हित कर जीर्णोद्धार का कार्य शुरू किया है। जिला परिषद् से जल संरक्षण

योजना के तहत इसको विकसित किया जाएगा। बैठक में निर्णय किया गया कि उद्योग, स्वास्थ्य, समाज कल्याण, पशुपालन और अनुसूचित जाति–जन जातीय निगम अपनी सभी योजनाओं का लाभ देने के लिए डाइयां में आयोजित शिविरों में ये सभी विभाग शामिल होंगे। पेयजल आपूर्ति और सड़क बाबत योजना पर जनस्वास्थ्य अभियांत्रिकी और सार्वजनिक निर्माण विभागों ने अपने प्रस्ताव प्रस्तुत किए। वेटरनरी विश्वविद्यालय द्वारा स्थापित होने वाले पुस्तकालय में सभी योजनाओं की सामग्री का प्रदर्शन किया जाएगा।

डाइयां में पशुचिकित्सा शिविर का आयोजन

वेटरनरी विश्वविद्यालय द्वारा स्मार्ट ग्राम परियोजना के अंतर्गत गोद लिए गांव डाइयां में 1 जुलाई को एक दिवसीय पशु स्वास्थ्य शिविर का आयोजन किया गया। इस अवसर पर 109 पशुओं का उपचार कर चिकित्सा सेवाएं दी। शिविर के दौरान मेडिसिन के 59, पशु मादा एवं प्रसूति रोग के 44 और शल्य चिकित्सा संबंधी 06 पशुओं का उपचार किया गया। परियोजना के नॉडल अधिकारी डॉ. नीरज कुमार शर्मा ने शिविर में पशुपालकों को रोगों से बचाव के लिए टीकाकरण और पशुधन उत्पादन के लिए संतुलित पशु आहार की जानकारी दी। इस अवसर पर आयोजित किसान गोष्ठी में डॉ. जे.पी. कच्छावा, डॉ. आशुतोष, डॉ. विनोद, डॉ. मुन्नालाल, डॉ. पंकज मिश्रा और डॉ. प्रमोद ने सक्रिय भागीदारी निभाई।

पशुपालक प्रशिक्षण समाचार

धौलपुर में 172 पशुपालकों का प्रशिक्षण संपन्न

पशुचिकित्सा विश्वविद्यालय प्रशिक्षण एवं अनुसंधान केन्द्र, धौलपुर द्वारा 8, 15, 18 एवं 22 जुलाई, 2016 को गांव फिरोजपुर, काजीपुरा, बिजोली एवं ध्वजपुरा में एक दिवसीय पशुपालक प्रशिक्षण शिविर का आयोजन किया गया । इन शिविरों में 172 पशुपालकों ने भाग लिया।

बाकलिया–लाडनूं में प्रशिक्षण शिविर

पशुचिकित्सा विश्वविद्यालय प्रशिक्षण एवं अनुसंधान केन्द्र, बाकलिया–लाडनूं जिला नागौर द्वारा 15, 16, 18 एवं 20 जुलाई, 2016 को गांव चोमूगांव, दुजार, कोलिया, काकरोड एवं 22 जुलाई को केन्द्र परिसर में एक दिवसीय पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों का आयोजन किया गया। इन शिविरों में 152 पशुपालकों ने भाग लिया।

कुम्हेर (भरतपुर) केन्द्र द्वारा तीन प्रशिक्षण आयोजित

वी.यू.टी.आर.सी., कुम्हेर द्वारा 5, 25 एवं 28 जुलाई, 2016 को गांव लखन, नंगला मेथना एवं कारोली में एक दिवसीय पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों एवं पशु स्वास्थ्य शिविर में 76 पशुपालकों ने भाग लिया।

कोटा में 171 पशुपालकों को प्रशिक्षण

पशुचिकित्सा विश्वविद्यालय प्रशिक्षण एवं अनुसंधान केन्द्र, कोटा द्वारा 8, 13, 16, 21 एवं 25 जुलाई, 2016 को गांव चोमा मालियान, संदेडी, डंगावत, खेडारसूलपुर एवं जोपड़िया में आयोजित एक दिवसीय पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों में 171 पशुपालकों ने भाग लिया।

टोंक केन्द्र द्वारा पशुपालक प्रशिक्षण

पशुचिकित्सा विश्वविद्यालय प्रशिक्षण एवं अनुसंधान केन्द्र, टोंक द्वारा 18 जुलाई, 2016 को गांव बीछपुरी में आयोजित एक दिवसीय पशुपालक प्रशिक्षण शिविर में 27 पशुपालकों ने भाग लिया।

वी.यू.टी.आर.सी. चूरू में 156 पशुपालकों को प्रशिक्षण

पशुचिकित्सा विश्वविद्यालय प्रशिक्षण एवं अनुसंधान केन्द्र, चूरू द्वारा 4, 13, 16 एवं 23 जुलाई, 2016 को गांव लाछडसर, नोसरिया, गोलसर एवं लूंछ गांव में एक दिवसीय पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों का आयोजन किया गया। इन शिविरों में 156 पशुपालकों ने भाग लिया।

वी.यू.टी.आर.सी.,सिरोही द्वारा शिविर आयोजित

पशुचिकित्सा विश्वविद्यालय प्रशिक्षण एवं अनुसंधान केन्द्र, सिरोही द्वारा 9 एवं 12 जुलाई, 2016 को गांव वराल एवं उठमण गांवों में एन.जी.ओ के साथ पशु स्वास्थ्य शिविरों का आयोजन किया गया। इन शिविरों में 128 पशुपालकों ने भाग लिया।

डूंगरपुर में पशुपालकों को प्रशिक्षण

वी.यू.टी.आर.सी., डूंगरपुर द्वारा 11, 16, 18 एवं 25 जुलाई, 2016 को गांव रंगपुर, चकरंगपुर, ओंधरी एवं ओलरी में आयोजित एक दिवसीय पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों में 92 महिला पशुपालक सहित कुल 135 पशुपालकों ने भाग लिया।

के.वी.के. नोहर द्वारा किसानों एवं पशुपालकों को प्रशिक्षण

कृषि विज्ञान केन्द्र, नोहर (हनुमानगढ़) द्वारा 7, 11, 14, 21, 25 जुलाई 2016 को गांव चक 22 एनटीआर, चारणवासी, चक 15 डी.पी.एन, फेफाना एवं रामगढ़ में आयोजित एक दिवसीय पशुपालक प्रशिक्षण एवं किसान गोष्ठी में 143 कृषकों एवं पशुपालकों ने भाग लिया।

वी.यू.टी.आर.सी. अजमेर में 125 पशुपालक लाभान्वित

पशुचिकित्सा विश्वविद्यालय प्रशिक्षण एवं अनुसंधान केन्द्र, अजमेर द्वारा 16, 18, 19 एवं 23 जुलाई, 2016 को गांव सरवाड़, सुरसुरा, अजमेर एवं सरसुंदा गांवों में आयोजित एक दिवसीय पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों में 125 पशुपालकों ने भाग लिया।

चित्तौड़गढ़ जिले में 188 पशुपालकों को प्रशिक्षण

पशुचिकित्सा विश्वविद्यालय प्रशिक्षण एवं अनुसंधान केन्द्र, बोजुन्दा जिला चित्तौड़गढ़ द्वारा 14, 19, 23 एवं 25 जुलाई, 2016 को गांव अरनिया पंथ, जालमपुरा, सेमलिया एवं ओछड़ी गांवो में एक दिवसीय पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों का आयोजन किया गया। इन शिविरों में 22 महिला पशुपालकों सहित कुल 188 पशुपालकों ने भाग लिया।

वी.यू.टी.आर.सी. सूरतगढ़ में 184 पशुपालकों को प्रशिक्षण

पशुचिकित्सा विश्वविद्यालय प्रशिक्षण एवं अनुसंधान केन्द्र, सूरतगढ़ द्वारा 18 जुलाई, 2016 को गांव जानकीदास तथा 20, 26, एवं 29 जुलाई, 2016 को केन्द्र परिसर में एक दिवसीय पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों का आयोजन किया गया। इन शिविरों में 184 पशुपालकों ने भाग लिया।

मनुष्यों में पशु जनित रोग व उनकी रोकथाम

ग्रामीण क्षेत्रों में कृषि के साथ पशुपालन भी आमदनी का मुख्य स्त्रोत होता है इसलिए ग्रामीण क्षेत्र के मनुष्य पशुओं के अन्तरंग सानिध्य में रहते हैं। पशुओं को पालते समय इस बात को अकसर तवज्जो नहीं दी जाती है कि कुछ रोग पशुओं के द्वारा स्वस्थ मनुष्यों में भी फैल सकते हैं। ऐसे रोग जो पशुओं से मनुष्यों में फैल सकते हैं उन्हें हम **''पशु जनित'' रोग कहते** हैं। ये रोग संक्रमित पशु व उनके स्त्राव से सीधे सम्पर्क, संक्रमित दूध व उनके उत्पाद, संक्रमित मांस के मनुष्यों द्वारा प्रयोग करने से लग सकते हैं।

ब्रुसेलोसिस रोगः— यह रोग ब्रुसेला नामक जीवाणु से होता है, जो गाय, भैंस, भेड़, बकरियों, श्वानों, घोड़ों व अन्य पशुओं के साथ–साथ मनुष्यों को भी प्रभावित करता है। यह जीवाणु मनुष्यों में संक्रमित पशु के स्त्राव के सीधा सम्पर्क में आने पर फैलता है। बिना उबले संक्रमित दूध और संक्रमित दूध से बने उत्पाद भी मनुष्यों में संक्रमण का मुख्य कारण हैं। मनुष्यों में इस रोग का संक्रमण होने पर बैचेनी, कमजोरी, भूख न लगना, ठंड लगना, रूक–रूक कर होने वाला बुखार (घटता–बढ़ता बुखार), रात में बहुत अधिक मात्रा में पसीना आना, थकान होना, सिर दर्द, कमर दर्द, मांसपेशियों में दर्द, जोड़ों में दर्द और सूजन व पुरूषों में अंड ग्रंथि का सूजना इत्यादि प्रमुख लक्षण हैं। इसके उपचार के लिए ब्रुसेलोसिस विरोधी प्रतिजैविक दवाईयाँ 6–8 हफ्ते तक लगातार लेनी चाहिए ताकि संक्रमण दुबारा न हों। इस रोग से बचने के लिए के लिए गर्भपात हुए पशुओं से स्त्रावित द्रव्यों को, नाल को, शिशु आदि को नंगे हाथों से न छुए और दूध अच्छी तरह उबाल कर पीना चाहिए।

ट्यूबरक्लोसिसः— यह एक संक्रामक रोग है जो ''माइकोबैक्टीरिया'' नामक जीवाणु से होता हैं। पशुओं से मनुष्यों में टी.बी. फैलना बहुत बार देखा गया है। यह जीवाणु संक्रमित हवा व पानी से स्वस्थ मनुष्यों में पहुँच जाता है। अगर क्षय रोग से पीड़ित जानवर का कच्चा दूध या बिना अच्छी तरह उबाला हुआ दूध पिया गया हो या मांस बिना अच्छी तरह पकाए खाया गया हो तो मनुष्यों में क्षय रोग हो सकता है। इस रोग से ग्रसित इंसान में लगातार थोड़ा–थोड़ा बुखार रहता हैं। पीड़ित मनुष्य थकान, कमजोरी व सुस्ती महसूस करता है, मनुष्य को लगातार खरांश (खांसी) बने रहता है, सीने में दर्द रहता है, फुफ्फुसीय यक्षया (प्लमोनरी टी.बी.) में खांसी के साथ खूनी बलगम भी आता है। वजन में लगातार कमी होती रहती है व मनुष्य क्षणकाय हो जाता है और यदि सही समय पर ईलाज न करवाएं तो मृत्यु भी हो सकती है। सरकारी केन्द्रों में ''डॉट्स'' (डायरेक्ट ऑब्जरवेटरी ट्रीटमेंट) कार्यक्रम के अनुसार टी. बी. की जांच व ईलाज करवाना चाहिए। टी. बी. के उपचार में 6 से 9 महीने तक क्षय विरोधी दवा नियमित लेनी होती है। अगर रोगी नियमित रूप से दवा लेता है तो इस रोग पर आसानी से काबू पाया जा सकता है।

एन्थ्रेक्सः— यह रोग बेसिलस एन्थ्रासिस नामक जीवाणु से फैलता है। यह जीवाणु स्वस्थ मनुष्यों के संक्रमित पशु और उनके उत्पाद से सीधा सम्पर्क में आने से फैलता है।

- **जठरीय आंत सम्बन्धी एथ्रेक्सः—** इसमें मिचली, बुखार व पेट दर्द व खूनी दस्त हो जाते हैं। मृत्यु दर 5 प्रतिशत से भी अधिक होती हैं।
- **त्वचा सम्बन्धी एन्थ्रेक्सः—** इस रोग में त्वचा में संक्रमण हो जाता है। शुरूआत में त्वचा लाल हो जाती है जैसे किसी खटमल या कीट ने काटा हो उसके पश्चात् वहां पर फफोला बन जाता है और तत्पश्चात् फोड़ा बन जाता है।
- **प्रधसन एंथ्रेक्सः—** इस रोग के लक्षणों में बैचेनी, सीने में दर्द, बुखार, सांस लेने में तकलीफ होना और शरीर का नीला पड़ जाना इत्यादि प्रमुख है।

इस रोग के ईलाज के लिए एन्थ्रेक्स विरोधी प्रतिजैविक दवाईयों का 7–10 दिन तक उपयोग करना चाहिए। पशुओं का टीकाकरण अवश्य करवाना चाहिए तथा जो मनुष्य संक्रमित पशुओं के सम्पर्क में रहते हैं उन सबको भी टीकाकरण करवा लेना चाहिए।

सालमौनेलोसिसः— यह रोग सालमौनेला नामक जीवाणु से फैलता हैं। यह रोग स्वस्थ मनुष्य द्वारा संक्रमित भोजन व पानी ग्रहण करने से फैलता हैं। यह रोग कम पके मीट, कच्चे दूध या अंडे से भी फैलता है। रोगी मनुष्य में बुखार, मिचली, उल्टी व उदर में मरोड़ उठने के साथ जबरदस्त बदबूदार दस्त लग जाते हैं। संक्रमित पशुओं के सम्पर्क में आने के बाद हाथों को अच्छी तरह साफ करना चाहिए।

रेबीज (हिड़काव):— यह एक विषाणुजनित प्राणघातक रोग है जो कि लाइसा नामक विषाणु से फैलता हैं। स्वस्थ मनुष्य के संक्रमित पशु की लार के सम्पर्क में आने से जैसे संक्रमित पशु के काटने से, संक्रमित पशु का निरीक्षण करने के लिए पशुपालक या पशुचिकित्सक द्वारा उसके मुहं में हाथ डालने से यह रोग हो सकता है। इस रोग में संक्रमित मनुष्य के गले की मांसपेशियों में पक्षापात हो जाता हैं, इस पक्षापात की वजह से जब वह पानी पीता है तो उसको निगलने में बहुत तकलीफ होती है व उसको बहुत दर्द होता है और इसी कारण से वह पानी देखकर डरने लग जाता हैं। ग्रसित इंसान को हल्का बुखार, मुहं से लार टपकना, सिर दर्द व चक्कर आना प्रमुख है और अंत में मनुष्य की मृत्यु भी हो जाती है। यह एक लाईलाज बीमारी है। बीमारी के लक्षण आने पर तुरंत नजदीकी चिकित्सालय में सम्पर्क करना चाहिए। श्वानों का समय–समय पर टीकाकरण करवाना चाहिए।

बर्ड़ फ्लूः— यह एक विषाणु जनित रोग है जो कि ओर्थोमिक्सो नामक विषाणु से फैलता है। इस रोग के विषाणु मुर्गे व मुर्गियों में पाए जाते हैं। इस रोग का विषाणु संक्रमित पक्षियों की बीट अथवा स्त्राव द्वारा हवा के माध्यम से फार्म पर कार्य करने वाले स्वस्थ मनुष्यों में नाकद्वार से प्रवेश करता है। इस रोग से पीड़ित मनुष्य में बुखार, सिर दर्द, जोड़ों में दर्द, मांसपेशियों में दर्द, गले में जकड़न व खांसी जैसे लक्षण देखने को मिलते हैं। फार्म पर साफ–सफाई का पूरा ध्यान रखना चाहिए व मरे हुए पक्षियों का निस्तारण वैज्ञानिक तरीके से करना चाहिए। बीमार पक्षियों का तुरन्त उपचार करवाना चाहिए व बीमार पक्षियों को स्वस्थ पक्षियों से अलग रखना चाहिए।

डा. राजेश सिंगाठिया एवं डा. सुनील कुमार तमोली
वी.यू.टी.आर.सी. चूरु, (मो.8505069065)

अपने विश्वविद्यालय को जानें

पशुचिकित्सा विश्वविद्यालय प्रशिक्षण एवं अनुसंधान केन्द्र, बोजुन्दा (चित्तौड़गढ़)

प्रसार शिक्षा निदेशालय के तहत वेटरनरी विश्वविद्यालय प्रशिक्षण और अनुसंधान केन्द्र चित्तौड़गढ़ जिले के बोजुन्दा गांव में वर्ष 2014 में स्थापित किया गया। यह केन्द्र चित्तौड़गढ़ शहर से 7 कि.मी. दूर उदयपुर की ओर जाने वाले राजमार्ग संख्या 76 पर स्थित है। केन्द्र पर कृषक– पशुपालकों के लिए एक प्रशिक्षण हॉल, दो आधुनिक उपकरणों से सज्जित प्रयोगशाला और एक पुस्तकालय कक्ष है। इसके अलावा एक व्याख्यान कक्ष, तीन कम्प्यूटरयुक्त कक्ष, एक स्टोर और एक कर्मचारी कक्ष भी है। केन्द्र के वैज्ञानिक और पशुचिकित्सा विशेषज्ञ जिले के पशुपालक और कृषकों को पशुचिकित्सा में नवाचारों, नवीन तकनीक का प्रचार–प्रसार कर पशुपालन एवं पशुओं के उत्पादन को बढ़ावा देना तथा पशुओं के वैज्ञानिक लालन–पालन, के सम्बन्ध में प्रशिक्षणों का आयोजन कर जानकारी देते हैं। पशुपालकों के आर्थिक उन्नयन के लिए स्वस्थ्य पशु और उनसे उत्पादन को बढ़ाने के बारे में शिक्षित–प्रशिक्षित करते हैं। वर्तमान में केन्द्र पर एक प्रभारी, पशुचिकित्सा विशेषज्ञ सहित दो टीचिंग एसोसिएट, एक पशुधन सहायक और दो सहायक कर्मचारी की सेवाएं उपलब्ध हैं। वैज्ञानिकों द्वारा गांवों का प्रारम्भिक सर्वे, गांवों में जाकर प्रशिक्षण और पशु स्वास्थ्य शिविरों का आयोजन भी किया जाता है। केन्द्र की प्रमुख गतिविधियों में वैज्ञानिक–पशुपालक वार्ता, विचार गोष्ठी का आयोजन करके पशुचिकित्सा में नवाचारों के बारे में भी प्रशिक्षण दिया जाता है। गत तीन वर्षो में केन्द्र द्वारा 49 प्रशिक्षण शिविरों का आयोजन कर 1874 युवा, महिलाओं, कृषकों और पशुपालकों को लाभान्वित किया गया। इनमें से 39 प्रशिक्षण शिविरों का आयोजन विभिन्न गांवों में जाकर किया गया हैं।

सर्वाधिक सम्भावित पशु रोग पूर्वानुमान–अगस्त, 2016

पशु रोग	पशु/पक्षी प्रकार	क्षेत्र
मुँह–खुरपका रोग	गौवंश, भैंस, बकरी, भेड़	बाँसवाड़ा, भरतपुर, दौसा, श्रीगंगानगर, जयपुर, झुंझुनूं, सवाईमाधोपुर, धौलपुर, अलवर, बून्दी, हनुमानगढ़, चूरू, कोटा, अजमेर, बीकानेर
बोवाइन इफिमिरल ज्वर (तीन दिन का बुखार)	गौवंश, भैंस	जैसलमेर, बाड़मेर, बीकानेर, जोधपुर, जालोर
पी.पी.आर.	बकरी, भेड़	जयपुर, श्रीगंगानगर, हनुमानगढ़, सवाई–माधोपुर, बीकानेर, चूरू
न्यूमोनिक पाश्चुरेलोसिस	भैंस, गौवंश, बकरी, भेड़	सीकर, सिरोही, पाली, जालोर, हनुमानगढ़, जयपुर, कोटा, बीकानेर, श्रीगंगानगर, अलवर, टौंक
गलघोंटू	भैंस, गौवंश	हनुमानगढ़, धौलपुर, जयपुर, सवाईमाधोपुर, दौसा टौंक, बून्दी, पाली, राजसमन्द, सीकर, चित्तौड़गढ़, अलवर, उदयपुर
ठप्पा रोग	गौवंश, भैंस	हनुमानगढ़, जयपुर, बीकानेर, भीलवाड़ा, पाली, राजसमन्द, जैसलमेर, चित्तौड़गढ़
फड़किया	बकरी, भेड़	सवाई–माधोपुर, बाँसवाड़ा, जयपुर, कोटा, सीकर, बीकानेर, कोटा, श्रीगंगानगर, धौलपुर, भीलवाड़ा, बारां
सर्रा	ऊँट, भैंस, गौवंश	बाँसवाड़ा, धौलपुर, हनुमानगढ़, बून्दी, सीकर, श्रीगंगानगर, भरतपुर
थाइलेरिओसिस एवं बबेसियोसिस	भैंस, गौवंश	बाँसवाड़ा, बीकानेर, बून्दी, धौलपुर, हनुमानगढ़, चूरू, सवाई–माधोपुर, श्रीगंगानगर
अन्तः परजीवी (गोल–कृमि एवं पर्ण–कृमि)	भैंस, गौवंश, भेड़, बकरी	डूंगरपुर, कोटा, राजसमन्द, बाँसवाड़ा, सवाईमाधोपुर, भरतपुर, बून्दी, धौलपुर, हनुमानगढ़, सूरतगढ़, सीकर
खुजली	ऊँट, भेड़, बकरी	झुंझुनूं, बीकानेर, श्रीगंगानगर, जैसलमेर, बाड़मेर, जयपुर, अलवर, बीकानेर, सीकर

विस्तृत जानकारी के लिए सम्पर्क करें – प्रो. जी.एस. मनोहर, अधिष्ठाता, वेटरनरी कॉलेज, बीकानेर, प्रो. ए.के. कटारिया, प्रभारी अधिकारी, एपेक्स सेन्टर एवं प्रो. अन्जु चाहर, विभागाध्यक्ष, जनपादकीय रोग विज्ञान, एवं निवारक पशु औषध विज्ञान विभाग, वेटरनरी कॉलेज, बीकानेर। फोन– 0151–2204123, 2544243, 2201183

स्वस्थ पशु व अधिक उत्पादन में सहायक होते हैं : खनिज लवण

डेयरी व्यवसाय से अधिक लाभ लेने के लिए खनिज लवण पशुओं की खुराक में उतना ही आवश्यक है जितना पशुओं की खुराक में हरा चारा और दाना। कुछ सीमा तक खनिज लवण चारे और दाने से पशुओं को मिल जाते हैं, पर इसकी मात्रा उनके दूध देने वाली शक्ति और शारीरिक जरूरतों से कहीं कम होती है। हमारे देश में पशु चारे व खाद्यान्नों में खनिज तत्व, सामान्य तत्व व सामान्य से कम मात्रा में पाये जाते हैं जो पशुओं की न्यूनतम खनिज तत्वों की आवश्यकताओं की पूर्ति करने में सक्षम नहीं होते हैं, दूसरी और कृषि की आधुनिक विधियों तथा रासायनिक खादों के प्रयोग से खाद्यान्नों का उत्पादन बढ़ने के कारण भूमि में कुछ खनिज तत्व जैसे फॉस्फोरस, कोबाल्ट, मैग्नीशियम कॉपर, जिंक, आयोडीन व सल्फर आदि का अभाव सा हो गया है, इनकी कमी का प्रभाव पौधों के विकास या उपज पर चाहे अधिक नहीं पड़े, किन्तु इन तत्वों की कमी वाले चारे/दाने/पौधों को खाने वाले पशु, खनिज तत्वों की समुचित मात्रा नहीं मिलने के कारण कुपोषण के शिकार अवश्य होते जा रहे हैं। इसलिए पशुओं को स्वस्थ रखने, विभिन्न रोगों से बचाने एवं उनकी उत्पादन क्षमता बनाए रखने के लिए खनिज लवण मिश्रण दिया जाना आवश्यक है। आजकल बाजार में विभिन्न मार्का का खनिज लवण मिश्रण व खनिज लवण की ईंटें भी उपलब्ध हैं जिसमें सभी खनिज लवण एवं विटामिन्स उपलब्ध होते हैं। यह लवण ईंट, पशु की ठांड में रख दी जाती है और पशु इसे आवश्यकतानुसार चाटता रहता है। इससे भी सभी तत्वों की कमी पूरी हो जाती है और यह सस्ती भी पड़ती है। इस प्रकार पशुओं को खनिज तत्वों की कमी से उत्पन्न होने वाली बीमारियों से बचाया जा सकता है और साथ ही उनका दूध उत्पादन भी बढ़ाया जा सकता है। पशुओं को जीवन पर्यन्त लाभदायक बनाये रखने के लिए ऐसा पशु आहार दिया जाना चाहिए जिसमें 2 प्रतिशत की दर से खनिज लवण व 1 प्रतिशत की दर से साधारण नमक मिला हुआ हो या प्रति पशु प्रतिदिन 30–50 ग्राम खनिज लवण व 20–30 ग्राम नमक अवश्य देते रहना चाहिए।

खनिज तत्वों के आम स्त्रोत

खनिज तत्व	स्त्रोत
कैल्सियम	स्थानीय घास, बरसीम, पेड़ के पत्ते, हरा चारा, लुर्सन घास
फास्फोरस	तेल खली, भूसी, चावल पालिश
पोटेशियम	हरा चारा, स्थानीय घास
सोडियम, क्लोरीन	नमक, मत्स्य चूर्ण, तेल खली
सल्फर	तेल खली, पशु प्रोटीन
मेग्नीशियम	फली, हरा चारा
तांबा	हरा चारा, भूसी, तेल खली, फली
जिंक	फली, पेड के पत्ते, स्थानीय घास
लोहा	हरा चारा, पेड के पत्ते, फली, स्थानीय घास
कोबाल्ट	हरा चारा, फली
आयोडीन	मत्स्य चूर्ण, तेल खली
मैंगनीज	चावल भूसी, अल्फाल्फा आहार, अनाज
सेलेनियम	स्थानीय घास, चारा
मॉलिब्डिनम	फली, स्थानीय घास

डॉ. दीपिका धूड़िया
सहायक प्राध्यापक, वेटरनरी कॉलेज, बीकानेर

वर्षाऋतु में पशुओं को मच्छर, मक्खी, कीट-पतंगों व सरीसृप के प्रकोप से बचाएं

प्रिय पशुपालकों! वर्षाऋतु हमारे लिये कृषि व चारे के लिए जहाँ खुशियां लेकर आती है वहीं कुछ परेशानी व बीमारियां भी लाती है। राजस्थान राज्य में बहुत बड़ा भू–भाग है जिसके अलग अलग क्षेत्रों में वर्षा का औसत अलग–अलग होता है। उत्तर–पश्चिमी राजस्थान में कम वर्षा होती है, जबकि दक्षिण–पूर्व राजस्थान में तुलनात्मक अधिक वर्षा होती है। इसी कारण राज्य में अलग–अलग क्षेत्रों में रहने वाले पशुओं में अलग–अलग बीमारियां होती हैं, लेकिन वर्षाऋतु में वातावरण में सभी स्थानों पर नमी बढ़ जाने से विभिन्न प्रकार के मच्छर, मक्खी, कीट–पंतगे व सरीसृप विकसित व सक्रिय होने से पशुओं को कई प्रकार की समस्याओं का सामना करना पड़ता है। वर्षाकाल में उत्पन्न हुए मच्छर, मक्खी, कीट–पंतगे कई प्रकार के विषाणु व रक्त परजीवियों के वाहक होते हैं। जब यह पशुओं को काटते हैं तो पशु कई प्रकार के विषाणुजनित एवं परजीवीजनित रोगों के शिकार हो जाते हैं। अतः पशुपालक को यह ध्यान रखना चाहिए कि उसके पशु इन मच्छर, मक्खी, कीट–पंतगों से बचे। इसके लिए पशुपालक पशु–घर अथवा बाड़े के आसपास एकत्र हुए पानी में मच्छर–कीट मारने की दवा का प्रयोग करें और व्यवस्था करें कि पशु बाड़े के आसपास पानी इकट्ठा न हों। कीट–पंतगों से बचाव के लिए पशु–घर व बाड़े में धुंआ का प्रयोग न करें अन्यथा पशुओं को श्वांस की बीमारी व न्यूमोनिया होने की संभावना रहती है। वर्षा ऋतु में एक समस्या बहुत सामान्य है, वो है मेगटवूंड (घावों में कीड़े) वर्षाकाल में मक्खियां बहुत सक्रिय होती हैं और पशु शरीर पर उत्पन्न घावों में अण्डे दे देती है। इन अण्डों से निकले लारवा (कीड़े) घाव में कुलबुलाते रहते हैं और इससे पशुओं को बहुत परेशानी होती है। पशुपालक को चाहिये कि इस समय शरीर पर यदि कोई घाव है तो उसकी उचित देखभाल करें और तारपीन के तेल से सफाई कर चिकित्सक से सलाह लेकर मल्हम इत्यादि लगायें जिससे घाव पर मक्खियां बैठकर पशु को परेशान न करें। वर्षाकाल में एक सामान्य समस्या सांपों द्वारा काटना (स्नेक बाईट) भी है। इस समय सांप काफी सक्रिय होते है और काफी संख्या में सांप द्वारा पशु काटने की दुर्घटना होती है। सामान्यतः पशु के होठ, टांगों के निचले हिस्से अथवा योनि व मल द्वार जैसे नाजुक अंगों पर सांप के काटने की घटना ज्यादा देखी गई है। सांप काटने के स्थान पर सूजन हो जाती है और बहुत तेज दर्द होता है। कई बार रात में पशु स्वस्थ छोड़ा जाता है और सुबह बाड़े में वह मृत मिलता है। पशु मृत्यु दर इस बात पर निर्भर करती है कि सांप कितना जहरीला है और उसने कितना जहर शरीर में छोडा है। वर्षा ऋतु में पशुपालक को सावचेत रहना चाहिए कि उसका पशु सांप का शिकार तो नहीं हुआ। यदि पता लग जाये कि पशु को सांप ने काटा है तो तुरत पशुचिकित्सक से सम्पर्क करें और इलाज के लिए उचित व्यवस्था करें। इस मौसम में पशुओं में जौंक का लगना भी एक आम समस्या है। जौंक इस समय तालाब, पोखर में काफी मिलती है। पशु जब पोखर में पानी पीता है अथवा नहाता है तो उसके शरीर पर जौंक लग जाती है जिससे पशु को काफी दर्द व परेशानी होती है। जौंक खून पीकर हट जाती है लेकिन काटे गए स्थान से लगातार खून बहता रहता है। पशुपालक को इसका तुरंत इलाज कराना चाहिए अन्यथा यह बड़े घाव का रूप लेकर ज्यादा परेशानी कर सकता है।

– प्रो. ए. के. कटारिया
प्रभारी अधिकारी, एपेक्स सेन्टर, राजुवास (मो. 9460073909)

अपने स्वदेशी बकरी वंश को पहचानें > सिरोही बकरी - गौरव प्रदेश का

राजस्थान में पाई जाने वाली बकरियों की नस्लों में सिरोही एक महत्वपूर्ण नस्ल है। यह मध्य एवं दक्षिण तथा अरावली क्षेत्र के शुष्क एवं अर्द्ध शुष्क क्षेत्र के सिरोही, उदयपुर, नागौर एवं अजमेर जिलों में मुख्यतया पाई जाती है। इसे देवगढ़ी, परबतसरी एवं अजमेरी के नाम से भी जाना जाता है। सिरोही बकरी मध्यम आकार की सुगठित शरीर वाली हल्के एवं गहरे भूरे रंग के धब्बों वाली नस्ल है। कुछ पशु पूर्णतया सफेद भी होते हैं। इसके कान चपटे पत्ती जैसे मध्यम आकार के होते हैं। नर व मादा दोनों में छोटे–छोटे सींग होते हैं जो ऊपर की ओर तथा पीछे की ओर मुडे हुए होते हैं। मध्यम आकार की पूंछ ऊपर की तरफ मुड़ी होती है। अधिकतर बकरी एक बार में एक ही बच्चे को जन्म देती है। इसे मांस एवं दूध दोनों के लिए पाला जाता है। वयस्क नर व मादा का भार क्रमशः 42 एवं 35 किलो होता है। सिरोही नस्ल की बकरी प्रतिदिन लगभग 400–600 ग्राम दूध देती है। दुग्ध उत्पादन मौसम एवं चारे की उपलब्धता पर निर्भर करता है। दस महीने में सिरोही बकरी दुबारा ब्याह जाती है। कम खा कर अधिक उत्पादन, अच्छी वृद्धि, स्थानीय वातावरण में अनुकूलता एवं रोग प्रतिरोधक क्षमता इसके प्रमुख गुण हैं। राजुवास के नवानियां, वल्लभनगर केन्द्र पर इस नस्ल के आनुवांशिक उत्थान के लिए ए.आई.सी.आर.पी का कार्यक्रम चलाया जा रहा है। इसके अलावा भरतपुर, रामसर (अजमेर), नागौर एवं फतेहपुर में भी इस नस्ल के सरकारी फार्म हैं, जहाँ किसानों व पशुपालकों को उच्च गुणवत्ता वाले नर (बकरे) वितरित किए जाते हैं।

सफलता की कहानी | शिक्षित युवा सुखविन्दर की किस्मत यूं बदली

ग्राम जानकीदास (करणीसर) तहसील सूरतगढ़ जिला श्रीगंगानगर के प्रगतिशील पशुपालक 28 वर्षीय सुखविन्दर सिंह ने एम.बी.ए. की शिक्षा प्राप्त कर बकरी पालन को अपना व्यवसाय बनाया। कुछ अलग करने की सोच और दूरदर्शिता के चलते बहुत ही उन्नत किस्म की बकरियों की खरीद कर वर्ष 2013 में एक नई शुरूआत की। अपना व्यवसाय शुरू करने से पूर्व इस शिक्षित युवक ने वर्ष 2012 में जोधपुर के बहुउद्देश्यीय पशुचिकित्सालय और गुरू अंगदेव विश्वविद्यालय से बाकायदा प्रशिक्षण भी प्राप्त किया। शुरूआत में इन्होंनें बीटल नस्ल की बकरी से व्यवसाय शुरू किया। अब वे बाजार की मांग को देखते हुए सोजत की तरफ से बकरी ला कर अपने व्यवसाय को चार चांद लगा रहे हैं। सुखविन्दर सिंह अपनी बकरियों को सूरत, पंजाब एवं आस–पास के बाजार में बेच रहे हैं और अच्छा लाभ अर्जित कर रहे हैं। उनकी वार्षिक आय लगभग 25–30 लाख रू. है। त्यौहार के अवसर पर उन्नत किस्म के बकरों को 1.15 लाख रू. प्रति बकरा तक बेच कर काफी अच्छा मुनाफा ले रहे हैं। सुखविन्दर सिंह वेटरनरी विश्वविद्यालय प्रशिक्षण एवं अनुसंधान केन्द्र, सूरतगढ़ पर आकर अपने व्यवसाय को आगे बढ़ाने एवं मुनाफे में ईजाद करने के लिए समय–समय पर प्रशिक्षण और नई तकनीकी ज्ञान प्राप्त कर रहे हैं। इन्होंनें वेटरनरी विश्वविद्यालय प्रशिक्षण एवं अनुसंधान केन्द्र, सूरतगढ़ से पशु रख–रखाव, पशु आहार, खेत में बकरी के लिए उचित वातावरण, साईलेज बनाने, अजोला उत्पादन आदि के बारे में भी प्रशिक्षण लिया है। वे केन्द्र से जुड़ कर नए आयामों को छूने में लगे हुए हैं। शिक्षित और बेरोजगार युवाओं के लिए सुखविन्दर एक आदर्श साबित हो सकते हैं।

(सम्पर्क– सुखविन्दरसिंह, सूरतगढ़ मो. 8890930078)

निदेशक की कलम से...

घासों की उपयोगिता और संरक्षण का सही समय है

मानसूनी बरसात के साथ ही चारों तरफ हरियाली का आलम दिखाई देता है। शुष्क व अर्द्ध शुष्क क्षेत्र और बालुई मिट्टी में जगह–जगह घास की हरितिमा मन को लुभाती है। घास हमारे पालतु पशुओं व वन्य जीवों का प्रमुख आहार होती है। यह पाचक और पौष्टिकता से भी भरपूर होती है। इसमें कच्ची प्रोटीन, ईथर निष्कर्ष, कच्चा रेशा, नत्रजन रहित निष्कर्ष और भस्म के रासायनिक संघटक मौजूद रहते हैं। प्रमुख घासों में सेवण, अंजन, धामण, भूरट, गिनी, बरमूडा, लांप, नेपियर, मकड़ा, भोबरा और गंठिल प्रमुख हैं। शुष्क क्षेत्र में कई घासों का सूखा चारा भी बहुत प्रचलित है। पश्चिमी राजस्थान में पाई जाने वाली करड़, भूरट, सेवण व नेपियर को ''हे'' बनाकर संरक्षित भी किया जा सकता है। यह चारा उच्च गुणवत्ता का होता है। कृषक और पशुपालक घासों की कटाई के उपरांत खेत और खलिहानों में सुरक्षित कर लेते हैं। जिसका उपभोग वर्ष पर्यन्त किया जाता है। किसान और पशुपालक आसानी से इनकी पहचान कर लेते हैं। भूरट घास को पशु बीज बनने से पहले चाव से खाते हैं। बीज सूखने के बाद कांटेदार रोये बन जाते हैं जो पशुओं के मुंह में चुभते हैं अतः इस घास को कच्ची अवस्था में ही काम में ले सकते हैं। कच्ची अवस्था में कांटे बनने से पूर्व काटकर सूखाकर अथवा ''हे'' बनाकर भी पशुओं को खिलाने के काम में ले सकते हैं। गिनी एक लम्बी, घनी व गुच्छेदार बहुवर्षीय घास है जो कल्लेदार व घनी होती है। ज्वार व बाजरे से इस घास का चारा स्वादिष्ट होता है जिसे सभी पशु चाव से खाते हैं। लाप घास पश्चिमी राजस्थान में चारे की मुख्य घास है जो भेड़–बकरियों का मुख्य आहार है तथा ऊंट भी बड़े चाव से खाते हैं। बरमूड़ा या दूब वर्ष पर्यन्त उगती है तथा तेजी से फैलने वाली हैं। बरसात के मौसम में इकट्ठी की गई घास को सूखाकर एकत्रित कर संरक्षित कर लेते हैं। यह चारे की कमी में पशुओं को खिलाने के काम में ली जाती है। नेपियर या हाथी घास को काटकर हरे चारे के रूप में पशुओं को खिलाया जाता है। इसका साइलेज स्वादिष्ट बनता है। किसान एवं पशुपालक भाईयों के लिए यह उपयुक्त समय है कि चहुं ओर मौजूद घासों का सही उपयोग कर भविष्य के लिए भी संरक्षित करें। वेटरनरी विश्वविद्यालय के पशुधन चारा संसाधन प्रबंधन एवं तकनीक केन्द्र से संपर्क कर आप इस बाबत मार्गदर्शन भी ले सकते हैं। **प्रो. राजेश कुमार धूड़िया, प्रसार शिक्षा निदेशक (मो. 9414283388)**

राजस्थान के समस्त आकाशवाणी केन्द्रों से प्रसारित ''धीणे री बात्यां'' कार्यक्रम

राजस्थान के समस्त आकाशवाणी चैनलों से प्रत्येक गुरूवार को प्रसारित **''धीणे री बात्यां''** के अन्तर्गत **अगस्त, 2016** में वेटरनरी विश्वविद्यालय, बीकानेर के वैज्ञानिकगण अपनी वार्ताएं प्रस्तुत करेंगे। राजकीय प्रसारण होने के कारण कभी कभी गुरूवार के स्थान पर इन वार्ताओं का प्रसारण अन्य उपलब्ध समय पर भी किया जा सकता है। पशुपालक भाईयों से निवेदन है कि प्रत्येक गुरूवार को प्रदेश के समस्त आकाशवाणी केन्द्रों के मीडियम वेव पर सायः 5:30 से 6:00 बजे तक इन वार्ताओं को सुनकर पशुपालन में लाभ उठाएं।

क्र.सं.	वार्ताकार का नाम व विभाग	वार्ता का विषय	प्रसारण तिथि
1	**डॉ. ए.के.पटेल,** अध्यक्ष **9414247042** केन्द्रीय भेड़ व ऊन अनुसंधान संस्थान, बीकानेर	चारागाह का विकास कर भेड़–बकरी पालन को सुदृढ करें।	04.08.2016
2	**डॉ. सत्यवीर सिंह, 7597098047** पशु शल्य चिकित्सा एवं विकिरण विभाग, सी.वी.ए.एस., बीकानेर	पशुओं में पाये जाने वाले शल्य चिकित्सकीय विकारों का प्राथमिक उपचार	11.08.2016
3	**डॉ. सीताराम गुप्ता 9413205638** पशुधन अनुसंधान केन्द्र, कोडमदेसर	गोबर एवं फार्म अवशेषों का सदुपयोग कैसे करें?	18.08.2016
4	**प्रो. शीला चौधरी 9829933108** अधिष्ठाता, पी.जी.आई.वी.ई.आर., जयुपर	पशु आहार में क्षेत्र विशेष खनिज तत्वों का महत्त्व	25.08.2016

मुस्कान !

संपादक
प्रो. आर. के. धूड़िया
सह संपादक
प्रो. ए. के. कटारिया
प्रो. उर्मिला पानू
दिनेश चन्द्र सक्सेना
संयुक्त निदेशक (जनसम्पर्क) से.नि.
संकलन सहयोगी
सुरेन्द्र कुमार श्रीमाली
प्रसार शिक्षा निदेशालय
0151-2200505
email : deerajuvas@gmail.com

पत्रिका में प्रकाशित आलेख/विचार लेखकों के अपने है।

बुक पोस्ट

भारत सरकार की सेवार्थ

सेवामें

.....

.....

.....

स्वत्वाधिकारी डायरेक्टर एक्सटेंशन एजुकेशन, राजुवास, बीकानेर के लिए प्रकाशक, मुद्रक प्रो. आर. के. धूड़िया द्वारा डायमंड प्रिन्टर्स एण्ड स्टेशनरी, नत्थूसर गेट, बीकानेर से मुद्रित एवं डायरेक्टर एक्सटेंशन एजुकेशन विजय भवन पैलेस राजुवास बीकानेर से प्रकाशित। सम्पादक : प्रो. आर. के. धूड़िया